International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-06-2023, Accepted: 18-06-2023, Published: 04-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 1-2

समसामयिक दृष्टि से सुभद्रा कुमारी का स्त्री विमर्श

जयन्ती मिश्रा
पी–एच. डी. छात्रा, महिला अध्ययन विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
''स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है।''
सिमोन द बउवार
सिमोन की इस पंक्ति से ही स्त्री विमर्श की आहट को पहचान लेना चाहिए। जो स्त्रियों को सदियों से घुटन भरे जीवन को जीने के लिए मजबूर कर रही है। पुरुष अपने मनमाने ढंग से स्त्री का शोषण कर रहा है। सुभद्रा जी ने इसी शोषण को मुद्दा बनाकर 'स्त्री अस्मिता को जागरूक बनाने का बीड़ा उठाया और साहित्य के माध्यम से स्त्री शोषण के सभी मुद्दों को अपनी कहानी लेखन में स्थान दिया। यहाँ शोषण केवल पुरुष द्वारा ही नहीं किया जा रहा है, सुभद्रा जी ने स्त्री के प्रति स्त्री का शोषण जो उजाकर किया है, वह पीड़ा पहुँचाने वाला है। कहते हैं, महिलाओं के रिश्तों में छत्तीस के आँकड़े होते हैं अर्थात् दो महिलाओं के मध्य मानसिक भिन्नता और उदण्डता जैसे सास बहू का रिश्ता, नंद–भाभी का रिश्ता, देवरानी–जेठानी का रिश्ता इत्यादि। वर्चस्व की इस लड़ाई में महिला ही महिला की दुश्मन बनी जा रही है। स्वभावतः यह स्त्री विमर्श को कमजोर बनाता है।

मूल शब्दः समसामयिक दृष्टि, स्त्री विमर्श

सुभद्रा जी का स्त्री विमर्श

प्राचीनकाल में सुभद्रा जी ने स्त्री–विमर्श जैसे मुद्दों की बात तो नहीं चलाई, परन्तु इस विषय पर धरातल पर उतरकर महिलाओं की समस्याओं को पहचाना और उनका समाधान भी किया। क्रमशः स्त्री को जागरूक करके उनको सशक्तीकरण की राह दिखाने का काम भी किया। जिसका सबसे बड़ा उदाहरण पुरुष द्वारा स्त्री को उच्च शिक्षा प्राप्त करने से रोकना। क्योंकि उनका मानना है कि यदि स्त्री ज्यादा शिक्षित हो जाएगी तो वह अपने अधिकार जान जाएगी और फिर सामाजिक विरोध बढ़ेगा। दूसरा यह कि स्त्रियाँ पढ–लिखकर करेंगी ही क्या? क्योंकि उन्हें करने घर के ही काम हैं, लेकिन महिला हितैषियों का मानना है कि स्त्री घर के कामों के साथ ज्ञानार्जन भी करेगी और अपना व्यक्तिगत विकास भी। अब अपनी अस्मिता की परिचायक वह स्वयं होगी।

सीमा ओझा के शब्दों में, ''स्त्री–विमर्श पर चर्चा करते समय सबसे पहले जिस तेजस्वी व्यक्तित्व का नाम ध्यान आता है, वह है मीरा, जिन्होंने मध्यकाल के सामन्ती समाज पितृसत्तात्मक समाज में विद्रोह का झंडा बुलन्द किया और अपने समय को झकझोर कर रख दिया। मीरा ने समाज द्वारा स्थापित मूल्यों व मान्यताओं को ललकारा और अपने विद्रोही तेवरों के सहारे अपनी अनोखी पहचान बनाई। ..... मीरा के बाद आधुनिक समय में जो अत्यन्त महत्वपूर्ण नाम सामने आते हैं, वे हैं महीयसी महादेवी वर्मा और वात्साल्य की प्रतिपूर्ति सुभद्रा कुमारी चौहान। महादेवी जी ने जहाँ पुरुष समाज के बन्धनों को अस्वीकार करते हुए स्त्री होने की करुणा को चित्रित किया वहीं सुभद्रा जी ने स्त्रीत्व के उल्लास और क्रान्तिमय तरलता को शब्द देते हुए स्त्रीत्व की गरिमा को नई ऊँचाई दी।''[1]

सुभद्रा जी स्वयं एक स्त्री थी, इसलिए वह किसी भी स्त्री की समस्या व उसके मनोभावों को गहराई से समझती थी। उन्होंने पुरुषों द्वारा गढ़ी गई सड़ी–गली परम्पराओं को नकारकर आधुनिकता की राह चुनी। इस रास्ते पर चलकर वह स्त्री की दशा और दिशा दोनों सुधारना चाहती थी, जिसमें उन्हें कई बुद्धिजीवियों के साथ ही देश की उन्नत महिलाओं का भी साथ मिला। तत्कालीन समय की पिछड़ी महिलाओं की एक बड़ी आबादी जो अपने को पुरुषों के अधीन मानने लगी थी, वे भी अपने हक के लिए स्त्री के मानवीय अधिकारों की घोषणा के आन्दोलन में सम्मिलित होने लगी।

सुभद्रा जी स्त्री शिक्षा का समर्थन करती हुई, उन्हें पुरुषों के बराबर अर्थोपार्जन करने के लिए प्रोत्साहित करती है जिसका जिक्र उन्होंने अपनी कहानी 'दो सखियाँ' में किया। सुभद्रा जी स्त्री विवाह से ज्यादा स्त्री शिक्षा पर बल देती है। वह 'मंगला' कहानी में अपने मनोभावों को प्रदर्शित करती हुई लिखती है– ''विवाह के बाद पुरुष पत्नी को अपनी सम्पत्ति समझने लगता है। पति चाहे जितना पढ़ा–लिखा विद्वान हो, पब्लिक प्लेटफार्म पर खड़ा होकर स्त्री के समान अधिकार और स्वतंत्रता देने के विषय में चाहे जितनी लम्बी–लम्बी स्पीचें झाड़े, पर घर के अन्दर पैर रखते ही पुरुष, पुरुष हो जाता है।''[2] इसी पर सुधा अरोरा कहती है कि ''घरेलू मध्यवर्गीय परिवार में एक शिक्षित चतुर पति बहुत ही चतुरता से पत्नी को मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है। वह अपनी पत्नी की विशेषताओं से भली–भांति परिचित है कि उसे कैसे 'स्लो डैथ' तक पहुँचाया जाए। स्त्री–विमर्श के हमने बहुत से आयाम देखे, पर मानसिक रूप से स्त्री को प्रताड़ित करने का घाव बहुत गहरा होता है, क्योंकि स्त्री पुरुष की अपेक्षा बहुत संवेदनशील होती है।''[3] इसीलिए सुभद्रा जी स्त्री विवाह से ज्यादा स्त्री शिक्षा पर बल देती है। वह इस बात से भली–भांति परिचित थी कि विवाह के बाद ही तो स्त्री असली शोषण का शिकार बनती है। जिसका अनदेखा चित्र उन्होंने अपनी 'मंगला' कहानी में स्त्री के वक्तव्यों से प्रदर्शित किया।

इस कथन से पुरुषों का स्त्री के प्रति दोगला व्यवहार खुलकर सामने रखने वाली सुभद्रा का चिंतन मनन सदैव चलता रहा। जिसके बाद उन्होंने स्त्री–पुरुष मित्रता पर रुढ़िवादी सोच को उजाकर किया। रुढ़िवादी जटिल मानसिकता वाले लोग स्त्री–पुरुष मित्रता को हेय दृष्टि से देखते है। उनका कहना है कि कोई स्त्री–पुरुष एक–दूसरे से मित्र भी हो सकते है क्या? रुढ़िवादी पारम्परिक सोच के मनुष्यों की इस सनकी मानसिकता के फितूर का निवारण नामुमकिन है। क्योंकि हमारा समाज इस रिश्ते को मित्रता का नहीं प्रेम का रिश्ता कह कर स्त्री को लांछित करता है। सुभद्रा जी की कहानी 'मँझली रानी' में

स्त्री–पुरुष के इस अचम्भित रिश्ते की चर्चा करते हुए उदाहरण प्रस्तुत किया है– ''वे मेरे कौन थे? मैं क्या बताऊ? वैसे देखा जाए तो मेरे कोई भी न होते थे। होते भी तो कैसे? में ब्राह्मण, वे क्षत्रिय, मैं स्त्री वे पुरुष। फिर न तो रिश्तेदार हो सकते थे और न मित्र। आह! यह क्या कह डाला मैंने! मित्र? भला किसी स्त्री का कोई पुरुष भी मित्र हो सकता है? और यदि हो भी तो क्या समाज इसे बर्दाश्त करेगा?''[4]

क्या समाज की स्त्रियों को टारगेट करने वाली यह मानसिकता सही है? कहने का अभिप्राय यह है कि प्रकृति ने मानव जीवन में नर और मादा की जब एक ही स्थिति, उद्देश्य और भूमिका बनाई है तो उनकी मित्रता पर आश्चर्य भरी निगाहें क्यों टिकी रहती है। समाज द्वारा इस रिश्ते के प्रति अपनी सन्देहजनक दृष्टि रखना स्वभावतः गलत है।

इसी तरह की समाज की मुख्यधारा से जुड़े स्त्री विमर्श के समसामयिक मुद्दे सुभद्रा जी को उद्वेलित कर युगदृष्टा सिद्ध करते है। स्त्रियों के प्रति उनकी संवेदना समाज का अनुकूल साक्षात्कार करती है। इस प्रकार उनका स्त्री विमर्श का समसामयिक मंथन अपने आप में परिपूर्ण है।

सन्दर्भ सूची

1. नारीवाद, वी0एन0 सिंह, जनमेजय सिंह, रावत पब्लिकेशन, पृ0 110
2. सुभद्रा कुमारी चौहान का कथा साहित्य, समग्र विश्लेषण, सुनीता मंडल, आनन्द प्रकाशन, पृ0 95
3. नारीवाद, वी0एन0 सिंह, जनमेजय सिंह, रावत पब्लिकेशन, पृ0 147
4. सुभद्रा कुमारी चौहान सम्पूर्ण कहानियाँ, राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 172